करता हूँ, चाहे यह शिक्षा हिन्दुओं को दी जाये या मुसलमानों को, चाहे यह बनारसहिन्दूविश्वविद्यालय में दी जाये अथवा अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय में। इससे ऐसे नवयुवक निकलेंगे, जो यदि अपने धर्म के प्रति निष्ठावान् होंगे तो ये अपने ईश्वर, अपने देश के प्रति भी निष्ठावान् होंगे। मुझे इस समय की प्रतीक्षा है जब इन विश्वविद्यालयों से निकले हुए विद्यार्थी एक दूसरे से और अधिक निकटता से गले मिलेंगे, जितना कि वे अब तक मिलते हैं और अपने को एक ही मातृभूमि के पुत्र समझेंगे।" उनका कहना था कि धर्म के वास्तविक ज्ञान से विशाल-हृदयता उपजेगी, ईश्वर से प्रेम की भावना उपजने से आपसी प्रेम बढ़ेगा और घृणा की भावना कमजोर पड़ेगी। धर्म से भारतीयों के दिलों में एकता और प्रेम का सूत्र संचारित करने का विचार मालवीयजी के मन में उस समय सर्वोपरि था, जब वह प्रस्तावित विश्वविद्यालय में धर्म और शिक्षा के सम्बन्ध पर वक्तव्य दे रहे थे।

इस विश्वविद्यालय के विकास में सरकार का सहयोग प्राप्त किया गया। इसी विचार से मालवीयजी ने फरवरी, 1916 में विश्वविद्यालय का शिलान्यास करने के लिए तत्कालीन वाइसराय को आमन्त्रित किया। इस समय वाइसराय के अतिरिक्त कई प्रान्तीय गवर्नर, राजे-महाराजे, जमींदार, शिक्षाशास्त्री और राष्ट्रनेता यहाँ एकत्र हुए। शिलान्यास समारोह का मूल उद्देश्य इस महान् विश्वविद्यालय की स्थापना और संचालन के लिए सम्पन्न धनिक राजे-महाराजे, जमींदार तथा सरकार से सहयोग प्राप्त करना था। मालवीयजी ने इसमें धनिक तथा निर्धन सभी वर्ग के लोगों से सहयोग लिया था। यहाँ गाँधीजी का भाषण महत्वपूर्ण था, जो विश्वविद्यालय के शिलान्यास के अवसर पर उन्होंने भारत वापस आने के पश्चात् सार्वजनिक रूप से दिया था। इसकी शब्दावली पर एनी बेसेंट तथा दरभंगा नरेश ने आपत्ति की थी, परन्तु अन्ततः मालवीयजी सभी विवादों से परे सबका सहयोग लेते हुए इस महान् विश्वविद्यालय की स्थापना में सफल रहे।

आरम्भ से ही इस विश्वविद्यालय को पूर्ण रूप से उन्होंने राष्ट्रीय रूप देने का प्रयास किया। सभी क्षेत्रों के तथा सभी सम्प्रदायों के योग्य अध्यापकों की उन्होंने तलाश की। वह स्वयं बीस वर्षों तक, 1919 से 1939 तक, इसके कुलपति रहे। विश्वविद्यालय की स्थापना करते समय उनका ऐसा विचार नहीं

था कि उन्हें इस प्रमुख पद पर बना रहना पड़ेगा, परन्तु आरम्भिक तीन वर्षों में जो भी प्रमुख व्यक्ति इस पद पर आसीन हुए, वे अलग-अलग कारणों से टिक नहीं सके। अतः मालवीयजी को स्वयं ही यह पदग्रहण करना पड़ा। एक बार इस पद को स्वीकारने के पश्चात् वह लगातार इस उत्तरदायित्व को निभाते रहे।

मालवीयजी के निर्देशों पर ही इस विश्वविद्यालय के विशाल और भव्य भवनों का निर्माण हुआ। उन्होंने इस विश्वविद्यालय को भारत का विशालतम और उपयोगी शिक्षा केन्द्र बनाने में अपनी पूरी शक्ति लगा दी। उन्हीं के प्रयासों के फलस्वरूप यह विश्वविद्यालय उन्नति के शिखर पर लगातार आगे बढ़ा।

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना समस्त प्राच्य एवं पाश्चात्त्य, प्राचीन एवम् आधुनिक ज्ञान के अर्जन, रक्षण एवं समन्वय के लिए की गयी। उन्होंने विश्वविद्यालय में प्राचीन भारतीय शास्त्रों के पारम्परिक पद्धति पर अध्ययन के लिए एक सर्वांगपूर्ण महाविद्यालय की स्थापना की, दूसरी ओर विज्ञान, तकनीकी तथा मानविकी के अधुनातन शाखा के अध्ययन के लिए अग्रगण्य विभागों की स्थापना की। भारत की राजनीतिक-आर्थिक स्वतन्त्रता के संग्राम के साथ-साथ भारत की बौद्धिक स्वतंत्रता की प्राप्ति का विचार विश्वविद्यालय की स्थापना के उद्देश्यों में स्पष्टतः प्रतिबिम्बित है। इसी कारण काशी हिन्दू विश्वविद्यालय अपने संस्थापनाकाल से आज तक प्रबल राष्ट्रीय चेतना एवं सांस्कृतिक-बौद्धिक समन्वय का प्रखर मंच बना हुआ है।

विश्वविद्यालय के तत्कालीन कुलपति सर्वपल्ली राधाकृष्णन् ने विश्वविद्यालय के रजत जयंती समारोह (1948) के अवसर पर कहा था, "अगर पत्थर का एक टुकड़ा संत पॉल की आवाज को प्रतिध्वनित करने की क्षमता रखता है, तो यहाँ हमारे समक्ष विश्वविद्यालय के शिलान्यास का यह पाषाण, केवल संगमरमर का एक टुकड़ा नहीं, संपूर्ण परिदृश्य है। प्रकृति यदि अपनी गोद में जीवन एवम् स्मृति का संचय करने की क्षमता रखती है, तो काशी के ये पाषाण उपनिषदों की ऋचाओं, वेदव्यास के शब्दों, बुद्ध के उपदेशों, गीता के संदेशों तथा अनेक संतों महात्माओं के कथनों को मूर्त रूप देने और दुहराने में पूर्ण सक्षम है। हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना और

विकास के लिये काशी से अधिक अच्छे और उपयुक्त स्थान की कल्पना नहीं की जा सकती। अगर हमें एक अच्छे पथ-प्रदर्शक, रक्षक तथा क्रिया-कलापों के निदेशक की आवश्यकता है, तो हमारे बीच हमारी महान् ऋषि परंपरा के प्रतिनिधि के रूप में पूज्य महामना मालवीय साक्षात् उपस्थित हैं, जिनकी आत्मा हिमालयी तिमिर की तरह निर्मल तथा जिनका जीवन सदैव देने के लिये है। उन्होंने यहाँ एक रोशनी जगायी है, जिससे यह धरती तबतक आलोकित रहेगी जबतक यह सभ्यता विद्यमान है।"

भारतीय इतिहास का यह यथार्थ एक व्यक्ति द्वारा निर्मित है। यह "सर्वविद्या की राजधानी" शिक्षा जगत् में महामना मालवीय के अभिनव चिंतन का युगान्तरकारी प्रयोग है। कर्नल वेजवुड के अनुसार यह "वर्तमान सदी में भारतीयों की महान् उपलब्धि है।"

## अन्तिम दस वर्ष

मालवीयजी नवंबर सन् 1919 से सितंबर सन् 1939 तक काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के कुलपति रहे। शरीर की शिथिलता के कारण कठिन उत्तरदायित्व का निर्वहन करना उनके लिये दुष्कर हो रहा था। अन्ततः उन्होंने त्यागपत्र देने का निश्चय किया तथा विश्वविद्यालय कोर्ट ने उनका त्यागपत्र स्वीकार करते हुए डॉ॰ सर्वपल्ली राधाकृष्णन् को विधिवत् कुलपति निर्वाचित किया। मालवीयजी को आजीवन रेक्टर नियुक्त किया गया।

अस्वस्थ होते हुये भी वे विद्यार्थियों की जितनी सहायता कर सकते थे करते रहते थे। वे नियमित रूप से प्रति सप्ताह रविवार को गीता प्रवचन में जाते थे, पर वहाँ उसके प्रति विद्यार्थियों की पर्याप्त अभिरुचि न देखकर दुःखी होते थे। वे बहुधा शिवाजी हाल जाते, कसरती नवयुवकों के हृष्ट-पुष्ट शरीर को देखकर प्रसन्न होते, उन्हें आशीर्वाद देते थे। वास्तव में इस समय शरीर संपत्ति की रक्षा और वृद्धि उनके उपदेश का विशेष विषय बन गया था। जो विद्यार्थी उनसे मिलता उसे वे कसरत करने की प्रेरणा प्रदान करते थे। विद्यार्थियों के प्रति उनका स्नेह अतुलनीय था। स्नेह ही वास्तव में उनके जीवन की संजीवनी थी। यही उनके जीवन का मूलाधार था। विश्वविद्यालय के ऊँचे-

ऊँचे भवन तथा वहाँ के प्राकृतिक सौन्दर्य के दृश्यों से कहीं अधिक छात्रों की चहल-पहल उन्हें अधिक आनंदित करती थी। शारीरिक कष्ट और मानसिक चिन्ता के बीच वे ही उनकी आशा की किरण, उनके संतोष का स्रोत थे।

सक्रिय राजनीति तथा विश्वविद्यालय के प्रबन्ध से अवकाश ले लेने के बाद भी मालवीयजी का सनातन धर्म सभा से पुराना संबंध बना रहा। उनके निवास-स्थान पर ही सभा का कार्यालय था, यहीं से साप्ताहिक "सनातन धर्म" प्रकाशित और वितरित होता था, धर्मोपदेश में संलग्न पंडितों को पुरस्कार और प्रोत्साहन प्राप्त होता था तथा गोरक्षा और गोवंश का काम भी होता था।

इस स्थिति में ही मालवीयजी ने सन् 1941 में गोरक्षा मण्डल की स्थापना कर उसकी विधिवत् रजिस्ट्री करायी। इस मण्डल द्वारा बिहार, युक्त प्रान्त और मध्य प्रदेश में गोरक्षा के प्रचार तथा गोशाला के संगठन का तथा कार्तिकशुक्ल प्रतिपदा से लेकर अष्टमी तक गोसप्ताह मनाने का प्रयत्न किया गया। शिवपुर में च्यवन आश्रम में गोशाला की स्थापना और उसका प्रबन्ध इस संस्था का मुख्य कार्य था। इसी क्रम में उनके समाजसुधार के कार्यों की लम्बी श्रृंखला यथा अन्त्योद्धार, विधवा तथा सवर्ण विवाह आदि की एक लम्बी कड़ी है।

## तिरोधान

कायाकल्प के बाद से ही मालवीयजी का स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता था। फिर भी भगवान् आशुतोष से उन्होंने कुछ और वर्षों के जीवन की माँग की और अन्ततः 12 नवंबर सन् 1946 की गोधूलि में अपनी स्वाभाविक शान्त मुद्रा में उन्होंने प्राण छोड़े।

मालवीयजी के तिरोधान का समाचार पूरे देश में फैल गया। लोग विलाप कर उठे। चिराग अपनी रोशनी लेकर अनन्त में विलीन हो चला। लोग शोकाकुल हो गये तथा काशी हिन्दू विश्वविद्यालय दस दिनों के लिए बन्द कर दिया गया। देशभर में शोकांजलियाँ अर्पित की गयीं। महामना की अंतिम यात्रा अब भी काशीवासियों के लिये अविस्मरणीय घटना है।

उनके तिरोधान पर गाँधी जी ने, जो उस समय नोआखाली के गाँवों में भ्रमण कर रहे थे, लिखा–"मालवीयजी अमर हैं .......... प्रारम्भिक यौवन से लेकर परिपक्व वृद्धावस्था तक परिश्रम ने उन्हें अमर बना दिया है। वे अपने अनुयायियों के सेवक थे। समझौते की भावना उनके स्वभाव का अंग था ......... उनका जीवन पवित्रता का मूर्तिमान् रूप था। वे करुणा और कोमलता के निधान थे।" महात्माजी ने तो सन् 1931 में एक संदेश में लिखा था–"आज मालवीयजी के साथ देशभक्ति में कौन मुकाबला कर सकता है। यौवन काल से प्रारम्भ कर आज तक उनकी देशभक्ति का प्रवाह अविच्छिन्न चला आया है।"

पण्डित जवाहरलाल नेहरू ने कहा, "हमें अत्यन्त शोक है कि हम अब उस उज्ज्वल नक्षत्र का दर्शन नहीं कर सकेंगे जिसने हमारे जीवन में प्रकाश दिया, बालकाल से ही प्रेरणा दी तथा भारत से प्रेम करना सिखाया।"

डॉक्टर राजेन्द्रप्रसाद ने लिखा, "एक महान् व्यक्तित्व आज संसार से उठ गया। पं॰ मालवीयजी के काम और उनके नाम से भावी पीढ़ी को यह प्रेरणा मिलेगी कि दृढ़ शक्ति से मनुष्य के लिये सब कुछ सम्भव है। मालवीयजी की सेवाएँ बहुत ऊँची हैं और कुछ शब्दों में उसका वर्णन नहीं किया जा सकता। मालवीयजी के रिक्त स्थान की पूर्ति नहीं हो सकती। वे सच्चे देशभक्त थे।"

आचार्य नरेन्द्रदेव ने फैजाबाद में एक शोकसभा की अध्यक्षता करते हुए कहा, "मालवीयजी भारत के गौरव स्तंभ थे। उनकी देशभक्ति और सेवा भारतीयों को नया उत्साह देती रहेगी। देश की पुकार पर उन्होंने अपनी वकालत छोड़ दी। देश में शिक्षा का प्रचार कर उन्होंने अमूल्य सेवा की है। हिन्दू विश्वविद्यालय अब उनका सर्वोत्तम स्मारक है।" श्री रफी अहमद किदवई ने कहा कि "मालवीयजी के निधन से देश ने एक महान् निर्माता खो दिया है।" सरदार अब्दुलखाँ निश्तर ने कहा, "मालवीयजी की मृत्यु से भारतीय रंगमंच से एक महान् व्यक्ति उठ गया। वे महान् विधानवादी ही नहीं, अपितु एक महान् शिक्षा प्रचारक और सुधारक थे।"

## महामना मालवीय

ईश्वरभक्ति और देशभक्ति मालवीयजी के जीवन के दो मूलमंत्र थे। इन दोनों का उत्कृष्ट संश्लेषण, ईश्वरभक्ति का देशभक्ति में अवतरण तथा

देशभक्ति की ईश्वरभक्ति में परिपक्वता उनके व्यक्तित्व का विशिष्ट सद्गुण था। उनकी धारणा थी कि "मनुष्य के पशुत्व को ईश्वरत्व में परिणत करना ही धर्म है। मनुष्यत्व का विकास ही ईश्वरत्व और ईश्वर है, और निष्काम भाव से प्राणिमात्र की सेवा ही ईश्वर की सच्ची आराधना है।

वे सार्वजनिक कार्यों के लिए जीवन भर साधन जुटाते रहे और "प्रिन्स एमंग बेगर्स" कहलाये। वे महान् देशभक्त, सात्त्विक सार्वजनिक जीवन जीने वाले मनीषी, जनसाधारण के सेवक, करुणा, सद्भावना और दया की मूर्ति, विदग्ध और उच्चकोटि के वक्ता, प्राणिमात्र से प्रेम करने वाले, शील के पर्याय, ललित कलाओं के प्रेमी और आहार-विहार में सरलता के प्रतीक थे।

गाँधीजी का कहना था कि "मालवीयजी के साथ देशभक्ति में कौन मुकाबला कर सकता है।" राजर्षि पुरुषोत्तमदास टण्डन के विचार में मालवीयजी "आदर्श मनुष्य थे", जिन्होंने "राजनीति और शिक्षा दोनों क्षेत्रों में युग परिवर्तक और युगप्रवर्तक का काम किया।" सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक सर प्रफुल्लचन्द्र राय का विचार था कि "गाँधीजी के बाद कोई दूसरा ऐसा मनुष्य मिलना कठिन है, जिसने इतना अधिक त्याग किया हो और बहुमुखी कार्यों का एक ऐसा प्रमाण प्रस्तुत किया हो जैसा कि मालवीयजी ने।"

श्री सी.वाई. चिन्तामणि का विचार है कि, "मालवीयजी ही एक ऐसे व्यक्ति हैं जो साबरमती के मनीषी (गाँधीजी) के कोष्ठक में रखने योग्य हैं।"पण्डित हृदयनाथ कुँजरू का विचार है कि "गाँधीजी को छोड़कर उनसे बड़ा भारतीय कोई नहीं हुआ।"

इसीलिये सारे देश ने उन्हें "महामना मालवीय" कहकर अपने दिलों में स्थान दिया। महामना की जन्मशताब्दी जयन्ती के अवसर पर प्रधानमन्त्री पं. जवाहरलाल नेहरू ने कहा -

"ऐसे मौके पर जब हम याद करते हैं एक महापुरुष को, तो उनकी जीवनी से हम लाभ उठायें, सीखें। बहुत कुछ हम सीख सकते हैं एक थाती में। दुनिया का इतिहास क्या है? बहुत बातें हैं दुनिया के इतिहास में, पर एक थाती में कहा जाये तो दुनिया का इतिहास दुनिया के जो बहुत ऊँचे तबके के लोग हैं, उनकी जीवनियाँ हैं, वहीं इतिहास है। एक थाती में यह सही बात है। और बातें भी हैं, लेकिन असल में शायद सबसे जरूरी बात यही है।"

"हमारे सामने तो कई ऐसी मिसालें हैं जिनसे हम सीख सकते हैं मालवीयजी के जीवन से। उनके सामने जो लक्ष्य था, जैसे उन्होंने काम किया और सफलता पायी, इस सबसे। हम मूर्तियाँ खड़ी करें, संस्थायें बनायें, यह तो ठीक है, लेकिन आखिर में सबक सीखें उनकी जिन्दगी से, उनके काम से और सीखकर उसी रास्ते पर चलें, आजकल के जमाने में उसको लगाकर चलें और आगे बढ़ें, तो यही उनका सबसे बड़ा स्मारक हो सकता है। यह अच्छा है कि समय आया उनकी शताब्दी मनाने का, तो पुराने और नये लोग फिर सोचें, विचार करें और सीखें कि वे क्या-क्या बातें थीं, जिससे मालवीयजी इतने ऊँचे महापुरुष हुए, कैसे उन्होंने भारत को आजादी के रास्ते में, अपनी संस्कृति का आदर करने के रास्ते में सबको आगे बढ़ाया और यह कि उनके बतलाये रास्ते पर चलकर भारत की सेवा हम किस तरह करें और आगे बढ़ें।"

## उद्धृत पुस्तकें


(1) महामना मदन मोहन मालवीय - जीवन और नेतृत्व

प्रोफेसर मुकुटबिहारीलाल

पृष्ठ-690, मालवीय अध्ययन संस्थान, मालवीय भवन, का.हि.वि.वि., (1978)।

(2) History of the Banaras Hindu University, S.L. Dar and S.Somaskandan, BHU Press, (1966).

(3) Mahamana Madan Mohan Malaviya–An Historical Biography, Page 1162 (II- Volume), Parmanand, BHU, (1985).

(4) महामना पं. मदनमोहन मालवीय की जीवनी

वेंकटेश नारायण तिवारी

पृष्ठ-238, का.हि.वि.वि., (1965)।

(5) मदनमोहन मालवीय

जगन्नाथ प्रसाद मिश्र

पृष्ठ-97 जवाहरलाल नेहरू कॉंग्रेस शताब्दी समिति, नयी दिल्ली, (1987)।

(6) आधुनिक भा ' के निर्माता : मदन मोहन मालवीय, सीताराम चतुर्वेदी, पृष्ठ 133, प्रक ान विभाग, भारत सरकार, नई दिल्ली-11001, चतुर्थ संस्करण (1985,

## महामना

| | |
|---|---|
| 25 दिसम्बर 1861 | प्रयाग में जन्म। |
| सन् 1878 | मिर्जापुर में कुन्दन देवीजी से विवाह। |
| सन् 1884 | कलकत्ता विश्वविद्यालय से बी.ए. परीक्षा में उत्तीर्ण। |
| जुलाई 1884 | इलाहाबाद जिला स्कूल में अध्यापक। |
| दिसम्बर 1886 | कलकत्ते में दादा भाई नौरोजी की अध्यक्षता में कॉग्रेस का दूसरा अधिवेशन-कौंसिलों में प्रतिनिधित्व के प्रश्न पर भाषण। |
| जुलाई 1887 | कालाकांकर में "हिन्दोस्थान" पत्र का सम्पादन कार्य प्रारम्भ। भारत धर्म मण्डल का स्थापना सम्मेलन। |
| सन् 1889 | हिन्दोस्थान पत्र का सम्पादन छोड़कर प्रयाग में वकालत की पढ़ाई प्रारंभ। |
| सन् 1891 | वकालत की परीक्षा पास करके जिला अदालत में वकालत प्रारम्भ। |
| दिसम्बर 1893 | प्रयाग हाई कोर्ट में वकालत। |
| मार्च 1898 | संयुक्त प्रान्त (उत्तर प्रदेश) के लेफ्टिनेंट गवर्नर को हिन्दी के सम्बन्ध में ज्ञापन। |
| सन् 1902-1903 | मालवीयजी के प्रयास से प्रयाग में हिन्दू बोर्डिंग हाउस का निर्माण। |
| सन् 1903-1912 | प्रान्तीय कौंसिल की सदस्यता - मालवीयजी द्वारा कौंसिल में प्रान्त की महत्त्वपूर्ण सेवा। |
| सन् 1904 | काशीनरेश की अध्यक्षता में विश्वविद्यालय की स्थापना का प्रस्ताव। |
| जनवरी 1906 | कुम्भ के अवसर पर प्रयाग में मालवीयजी द्वारा आयोजित सनातन धर्म महासभा का अधिवेशन। |

| | |
|---|---|
| | उदार सनातन धर्म का प्रचार। काशी में भारतीय विश्वविद्यालय खोलने का निर्णय। |
| सन् 1907 | मालवीयजी के सम्पादकत्व में "अभ्युदय" का प्रकाशन, लोकतांत्रिक सिद्धान्तों और उदार हिन्दू धर्म का प्रसार। |
| सन् 1909 | प्रयाग में मालवीयजी के सम्पादकत्व में "लीडर" पत्र का प्रकाशन। लाहौर में कॉंग्रेस अधिवेशन की अध्यक्षता। |
| सन् 1910-1920 | भारतीय कौंसिल की सदस्यता तथा योगदान। |
| अक्टूबर 1910 | हिन्दी साहित्य सम्मेलन के प्रथम अधिवेशन में अध्यक्षीय भाषण। |
| 28 नवम्बर, 1911 | हिन्दू यूनिवर्सिटी सोसाइटी का गठन। |
| दिसम्बर 1911 | पचास वर्ष की आयु होने पर वकालत का त्याग। सारा जीवन राष्ट्र की सेवा में बिताने का दृढ़ संकल्प। काशी विश्वविद्यालय की स्थापना के लिए विशेष प्रयत्न करने का निर्णय। |
| फरवरी 1915 | मालवीयजी की अध्यक्षता में प्रयाग सेवा समिति का गठन। |
| अक्टूबर 1915 | काशी हिन्दू विश्वविद्यालय बिल पारित। |
| 4 फरवरी, 1916 | काशी हिन्दू विश्वविद्यालय का शिलान्यास समारोह। |
| मार्च सन् 1916 | प्रतिज्ञाबद्ध कुली प्रथा के विरुद्ध कौंसिल में प्रस्ताव। |
| सन् 1916 | हरिद्वार में गंगा की माँग। |
| सन् 1916-18 | औद्योगिक समिति के सदस्य। |
| सन् 1918 | सेवा समिति द्वारा स्काउट असोसिएशन का गठन। |
| दिसम्बर 1918 | दिल्ली में कॉंग्रेस के वार्षिक अधिवेशन की अध्यक्षता। |

| | |
|---|---|
| फरवरी 1919 | रौलेट बिल पर कौंसिल में बहस (कौंसिल से इस्तीफा)। |
| नवम्बर 1919 से सितम्बर 1939 तक | काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के कुलपति। |
| 19 अप्रैल 1919 | बम्बई में मालवीयजी की अध्यक्षता में हिन्दी साहित्य सम्मेलन का अधिवेशन। |
| जनवरी 1922 | सर्वदलीय सम्मेलन का आयोजन। |
| 16 दिसम्बर, 1922 | लाहौर में हिन्दू-मुस्लिम सौहार्द पर भाषण असेंबली में मालवीयजी और जिन्ना द्वारा इंडिपेंडेंट पार्टी का गठन। उसके बाद स्वराज्य पार्टी से मिलकर नेशनलिस्ट पार्टी का गठन। |
| सन् 1924 | प्रयाग में संगम पर सत्याग्रह। फौलाद संरक्षण विधेयक पर बहस। ब्रिटिश कम्पनियों को बाउण्ड्री देने का विरोध। |
| अगस्त 1926 | मालवीयजी और लाजपत राय के नेतृत्व में कॉग्रेस इंडिपेंडेंट पार्टी का गठन। |
| फरवरी 1927 | कृषि आयोग के सामने गवाही। |
| दिसम्बर 1929 | काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के दीक्षान्त समारोह में दीक्षान्त भाषण। विद्यार्थियों को देशसेवा और राष्ट्रीयता का उपदेश। |
| सन् 1930 | असेम्बली से इस्तीफा। दिल्ली में गिरफ्तारी। छः मास की सजा। |
| 5 अप्रैल 1931 | कानपुर में हिन्दू-मुस्लिम एकता पर भाषण। |
| सन् 1931 | महात्मा गाँधी के साथ लन्दन में गोल मेज कान्फ्रेंस में भागीदारी। |
| मार्च 1932 | वाराणसी में मालवीयजी की अध्यक्षता में अखिल भारतीय स्वदेशी संघ का गठन। |

| | |
|---|---|
| 20 अप्रैल 1932 | कॉंग्रेस का दिल्ली अधिवेशन। मनोनीत अध्यक्ष मालवीयजी की गिरफ्तारी। |
| सितम्बर 1932 | अन्त्यजोद्धार पर बम्बई में सभा की अध्यक्षता। |
| अप्रैल 1932 | कॉंग्रेस के कलकत्ता अध्यक्ष मालवीयजी की आसनसोल में गिरफ्तारी। |
| अगस्त 1934 | काशी में गाँधीजी की सभा में हरिजनोद्धार पर भाषण। कॉंग्रेस-नेशनलिस्ट पार्टी का गठन। |
| जनवरी 1936 | प्रयाग में मालवीयजी के नेतृत्व में सनातन धर्म महासभा का अधिवेशन। अन्त्यजोद्धार पर प्रस्ताव। |
| सन् 1938 | कायाकल्प। |
| नवम्बर 1939 | विश्वविद्यालय के आजीवन रेक्टर नियुक्त। |
| सन् 1941 | गोरक्षा मण्डल की स्थापना। |
| जनवरी 1942 | काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की रजत-जयंती। गाँधीजी का दीक्षान्त भाषण। |
| 12 नवम्बर 1946 | निधन। |

मालवीय जी का विद्यार्थियों को उपदेश था
सत्येन ब्रह्मचर्येण व्यायामेनाथ विद्यया।
देशभक्त्यात्मत्यागेन सम्मानर्हः सदाभव।।

अर्थात् सत्य, ब्रह्मचर्य, व्यायाम, विद्या देशभक्ति आत्मत्याग द्वारा अपने समाज में सम्मान के योग्य बनो।

वे चाहते थे कि विद्यार्थी सदा सत्य का आचरण करें, बह्मचर्य और व्यायाम द्वारा अपनी जीवन शक्ति को परिपुष्ट करें, नियमित रुप से विद्याध्ययन कर अपनी बौद्धिक शक्ति का विकास करें, अपने में अपने कुटुम्ब तथा अपने राष्ट्र की सेवा करने की क्षमता पैदा करें, सदा शुद्धता से रहें और शील का पान करें, अपने सद्व्यहार से अपने विद्यालय का गौरव बढ़ायें, गुरुजनों का आदर करें। सहपाठियों के साथ सौहार्दपूर्ण व्यवहार करें, छोटे कर्मचारियों के साथ सहानुभूति और प्रेम का व्यवहार करें, छोटे कर्मचारियों के साथ सहानुभूति और प्रेम का व्यवहार करें, अपने से छोटों की सेवा अपना कर्त्तव्य समझें, दूसरों के प्रति कोई भी ऐसा आचरण न करें जिसे वह अपने प्रति किया जाना अनुचित समझें, उन कार्यों से डरें जो निष्कृष्ट और त्याज्य हैं, मातृभूमि से प्रेम करें,

जनता की सुखवृद्धि करें, जहाँ कहीं भी अवसर मिले भलाई करें। वे चाहते थे कि विद्यार्थी अपने अवकाश तथा छुट्टियों में गावों में जाकर गाँव वालों के साथ काम करें, अविद्या रूपी अन्धकार को जो हमारी अधिकांश जनता को आच्छादित किए हुए है ज्ञान के प्रकाश से दूर कर दें। वे चाहते थे कि भारतीय शिक्षित सहनशीलता, क्षमा, तथा निःस्वार्थ सेवा के भाव को अपने जीवन में विकसित कर अपने छोटे भाइयों के उत्थान के लिए अधिक से अधिक अपना समय तथा शक्ति लगावें, उनके साथ मिलकर काम करें, उनके शोक तथा आनन्द में उनका हाथ बटावें, और उनके जीवन को दिनोदिन सुखमय बनाने का प्रयत्न करें। वे तो वास्तव में यह भी चाहते थे कि हम ईश्वर का स्मरण रक्खें, तथा यह विश्वास रखते हुए कि ईश्वर सभी प्राणियों में विद्यमान है अपने अन्य जीवधारी भाइयों से अपना सच्चा सम्बन्ध प्रतिष्ठित करें।

*1929 में दिये गये दीक्षांत भाषण से।*

# कुल गीत

मधुर मनोहर अतीव सुन्दर, यह सर्वविद्या की राजधानी।
यह तीन लोकों से न्यारी काशी, सुज्ञान धर्म और सत्यराशी।।
बसी है गंगा के रम्य तट पर, यह सर्वविद्या की राजधानी।
नये नहीं हैं ये ईंट पत्थर, है विश्वकर्मा का कार्य सुन्दर।।
रचे हैं विद्या के भव्य मंदिर, यह सर्वसृष्टि की राजधानी।
यहाँ की है यह पवित्र शिक्षा, कि सत्य पहले फिर आत्म-रक्षा।।
बिके हरिश्चन्द्र थे यहीं पर, यह सत्यशिक्षा की राजधानी।
वह वेद ईश्वर की सत्यवानी, बनें जिन्हें पढ़ के ब्रह्मज्ञानी।।
थे व्यास जी ने रचे यहीं पर, यह ब्रह्म-विद्या की राजधानी।
वह मुक्तिपद को दिलानेवाले, सुधर्मपथ पर चलानेवाले।।
यहीं फले-फूले बुद्ध, शंकर, यह राज-ऋषियों की राजधानी।
सुरम्य धाराएँ वरुणा अस्सी, नहाए जिनमें कबीर तुलसी।।
भला हो कविता का क्यों न आकार, यह वागविद्या की राजधानी।
विविध कला अर्थशास्त्र गायन, गणित खनिज औषधि रसायन।।
यह मालवीय जी की देशभक्ति , यह कर्मवीरों की राजधानी।
मधुर मनोहर अतीव सुन्दर, यह सर्वविद्या की राजधानी।।